

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या – 3244
दिनांक 07.08.2026 को उत्तर दिए जाने के लिए

भारत की आर्कटिक नीति

3244. श्री राव राजेन्द्र सिंह

क्या विदेश मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) सरकार द्वारा नॉर्डिक देशों के साथ परिवहन और संपर्क के सुदृढीकरण के लिए भारत की आर्कटिक नीति के अंतर्गत क्या उपाय किए गए हैं;
- (ख) भारत की आर्कटिक नीति के अंतर्गत जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए नॉर्डिक देशों के साथ मिलकर उठाए गए कदम क्या हैं; और
- (ग) नॉर्डिक देशों के साथ भारत की साझेदारी किस प्रकार समुद्री और पर्यावरणीय सहयोग को सशक्त कर रही है?

उत्तर
विदेश राज्य मंत्री
(श्री कीर्तवर्धन सिंह)

(क) से (ग) भारत की आर्कटिक नीति वर्ष 2022 में "भारत और आर्कटिक: सतत विकास के लिए साझेदारी का निर्माण" शीर्षक के अंतर्गत जारी की गई थी। इस नीति के अनुसरण में, भारत कनेक्टिविटी, जलवायु कार्रवाई और समुद्री एवं पर्यावरणीय सहयोग पर सभी नॉर्डिक देशों के साथ मिलकर काम करता है, जिसमें शिखर सम्मेलन-स्तरीय सहभागिता भी शामिल है।

19 मई 2026 को नॉर्वे में आयोजित तीसरे भारत-नॉर्डिक शिखर सम्मेलन में भारत-नॉर्डिक संबंधों को "हरित प्रौद्योगिकी और नवाचार रणनीतिक साझेदारी" के रूप में उन्नत करने का निर्णय लिया गया था। नेताओं ने भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे के सतत विकास के अनुरूप, नॉर्डिक और हिंद-प्रशांत क्षेत्रों के बीच कनेक्टिविटी में सुधार करने पर भी सहमति व्यक्त की। फिनलैंड और डेनमार्क के साथ सीधी हवाई कनेक्टिविटी भी उपलब्ध है।

जलवायु परिवर्तन के संबंध में, भारत और नॉर्डिक देश स्वच्छ ऊर्जा और सतत आर्थिक विकास के पक्ष में बदलाव के समर्थन में नवीकरणीय ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, शून्य एवं अल्प-उत्सर्जन प्रौद्योगिकियों जैसे कार्बन कैप्चर, उपयोग

और भंडारण तथा महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में मिलकर काम कर रहे हैं। उद्योग जगत से उत्सर्जन को कम करने के लिए वर्ष 2019 में भारत और स्वीडन द्वारा शुरू किए गए 'लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांज़िशन' (लीडआईटी) में अब तक अधिकांश नॉर्डिक देश शामिल हो चुके हैं।

द्विपक्षीय वार्ताओं तथा हिंद-प्रशांत महासागर पहल के माध्यम से समुद्री और पर्यावरणीय सहयोग को सुदृढ़ किया जा रहा है जिसमें समुद्री सुरक्षा, नाविकों का कल्याण, समुद्र में प्रदूषण की रोकथाम, ग्रीन शिपिंग, पोत निर्माण, सतत पोत पुनर्चक्रण तथा महासागरीय संसाधनों का सतत प्रबंधन शामिल है। भारत ने हाल ही में नॉर्वे और डेनमार्क सहित नॉर्डिक देशों के साथ समुद्री सुरक्षा वार्ताओं की शुरुआत की है।

भारत नॉर्वे के स्वालबार्ड स्थित अपने अनुसंधान केंद्र 'हिमाद्रि' के माध्यम से आर्कटिक क्षेत्र में अपना वैज्ञानिक कार्य भी जारी रखे हुए है, जहां दिसंबर 2023 से शीतकालीन अभियान चलाए जा रहे हैं। आर्कटिक के हिमनदों में होने वाले परिवर्तनों, समुद्री जीवन और समुद्री प्रदूषण का अध्ययन करने के लिए भारत का राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं महासागर अनुसंधान केंद्र नॉर्डिक देशों के संस्थानों के साथ मिलकर कार्य करता है।
